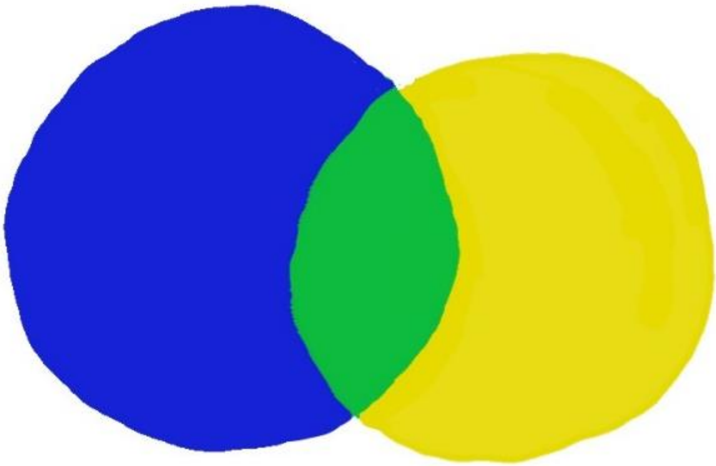

दोस्ती

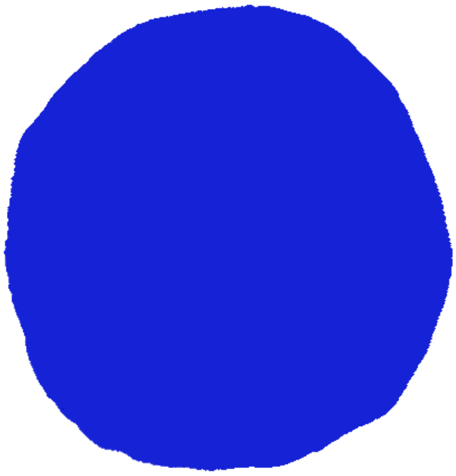

ये है छोटा नीलू।

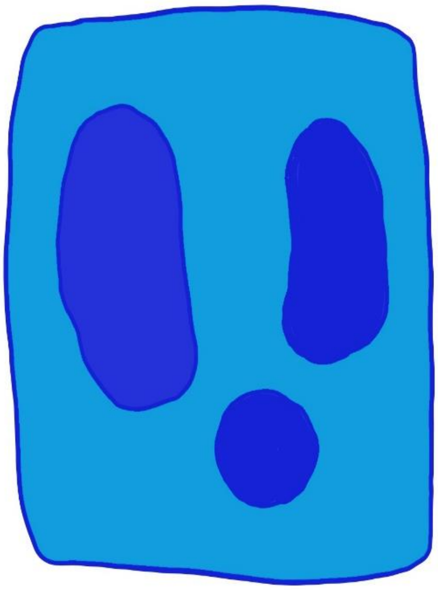

और यह है नीलू का घर, जहाँ वह माँ
नीली और पापा नीले के साथ रहता है।

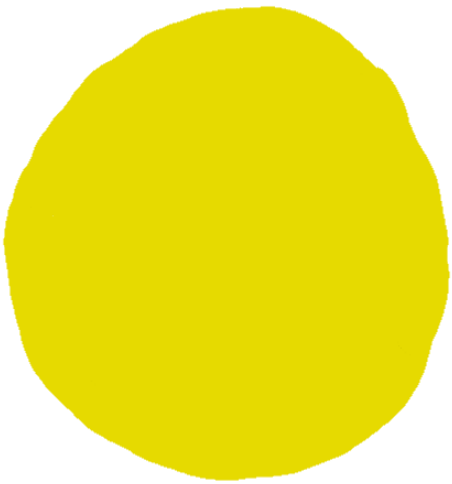

यह है पीलू।

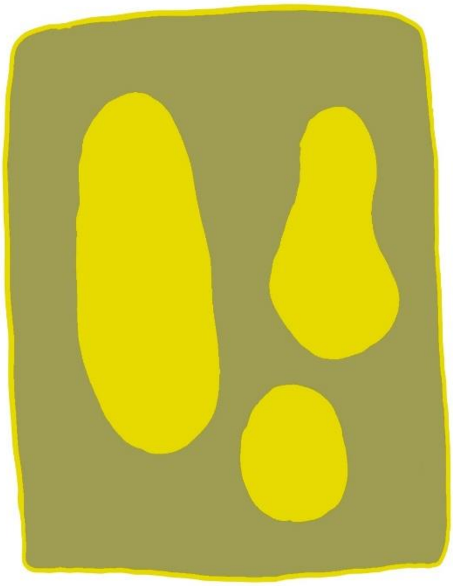

ये नीलू के घर के पास ही सड़क के उस पार रहता है, अपनी माँ पीली और पापा पीले के साथ।

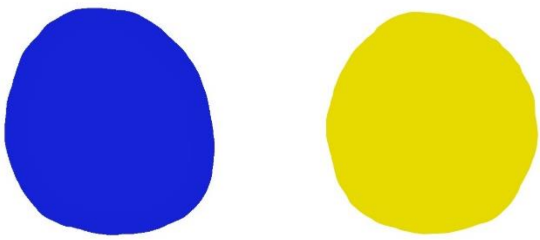

नीलू और पीलू दोस्त हैं। साथ-साथ स्कूल जाते हैं, साथ पढ़ते और खेलते हैं,और साथ ही घर भी आते हैं।

स्कूल के सारे बच्चों से उनकी अच्छी बनती है।

लेकिन पक्के दोस्त तो वो एक दूसरे के ही हैं।

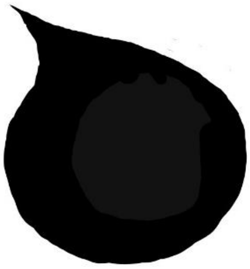

ये काल्‍ू है।

ये बहुत शैतान बच्चा है।
इसे स्कूल जाना जरा पसंद नहीं।
सारा दिन इधर-उधर शैतानी करता घूमता रहता है। इसका गुस्सा भी बहुत तेज़ है।
सारे बच्चे इससे डरते हैं।

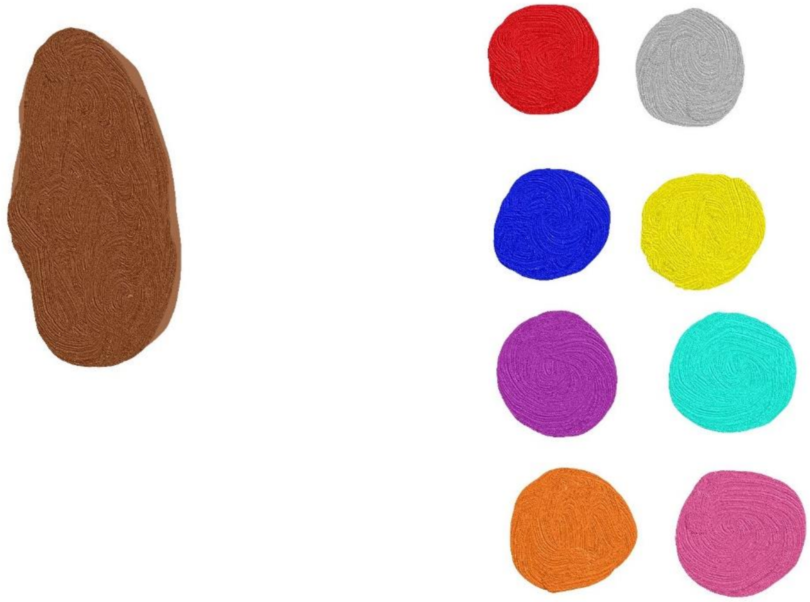

कालू बहुत दिनों से स्कूल नहीं आ रहा। मास्टर भूरेलाल ने बच्चों से उसके बारे में पूछा। सब जानते हैं वो कहाँ है, लेकिन कालू के डर से कोई जवाब नहीं देता। आखिर मास्टर भूरेलाल ने नीलू को खड़ा कर के उससे ही पूछ लिया।

नीलू झूठ नहीं बोल सकता। तो उसे बताना ही पड़ा। उसने कालू को तालाब के पास देखा था। वो किताब के पन्नों की नाव बना रहा था।

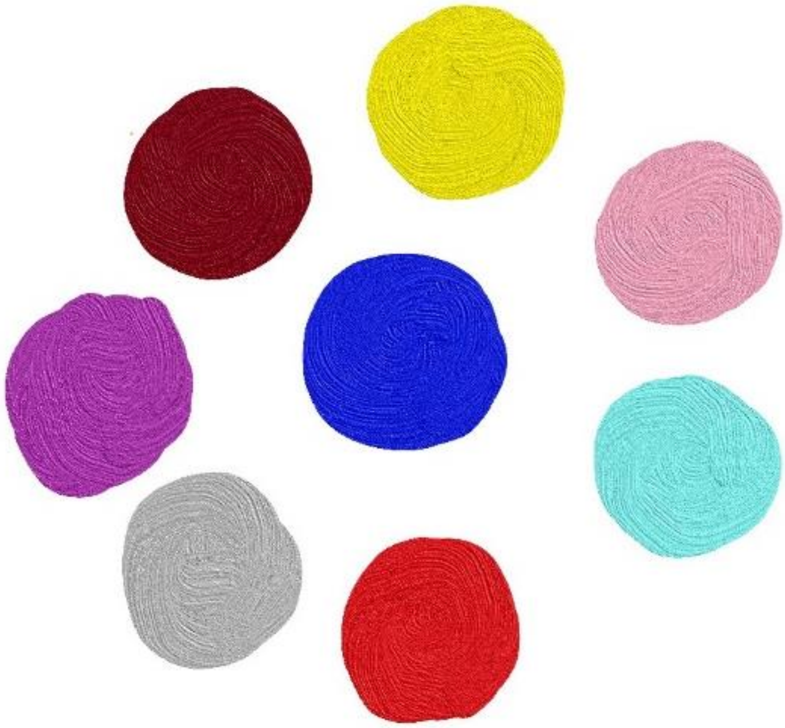

सारे बच्चे डर कर नीलू को देखने लगे। कालू को पता चल गया, कि नीलू ने उसका नाम मास्टरजी को बताया है, तो वो उसे बहुत मारेगा।

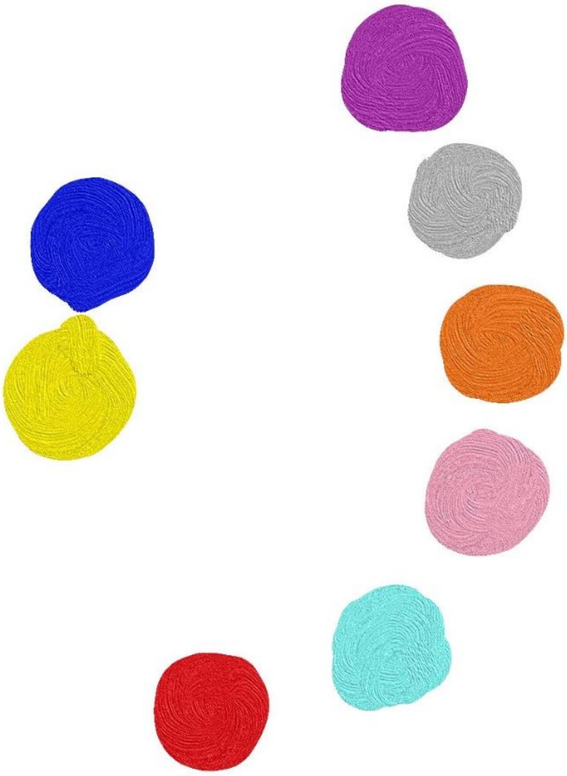

डरता तो नीलू भी बहुत है। लेकिन वो मास्टरजी से झूठ कैसे बोलता?

पीलू ने कहा, “डरने की कोई बात नहीं। अब से मैं हरदम तुम्हारे साथ रहूँगा।

वैसे तो कालू को पता ही नहीं चलेगा, और अगर चल भी गया, तो हम दोनों मिल कर उसका मुकाबला करेंगे।”

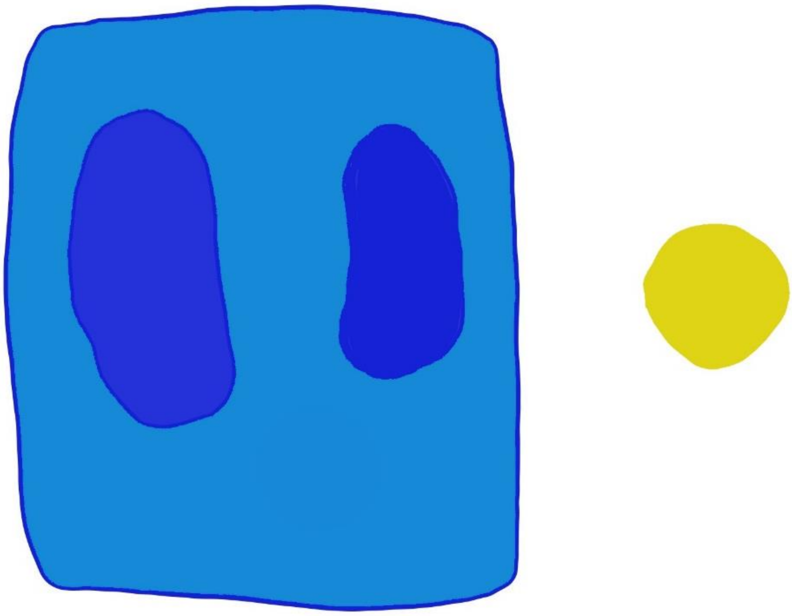

शाम को पीलू नीलू के घर खेलने गया। लेकिन नीलू घर पर नहीं था। उसकी माँ ने बताया कि उसे सामान लेने बाहर भेजा है।

“ अकेले?” पीलू ने पूछा।

“ हाँ! अब वो बड़ा हो गया है।” माँ नीली ने कहा।

“ बाप रे ! अगर कालू को पता चल गया तो....”

पीलू नीलू को ढूँढने दौड़ पड़ा।

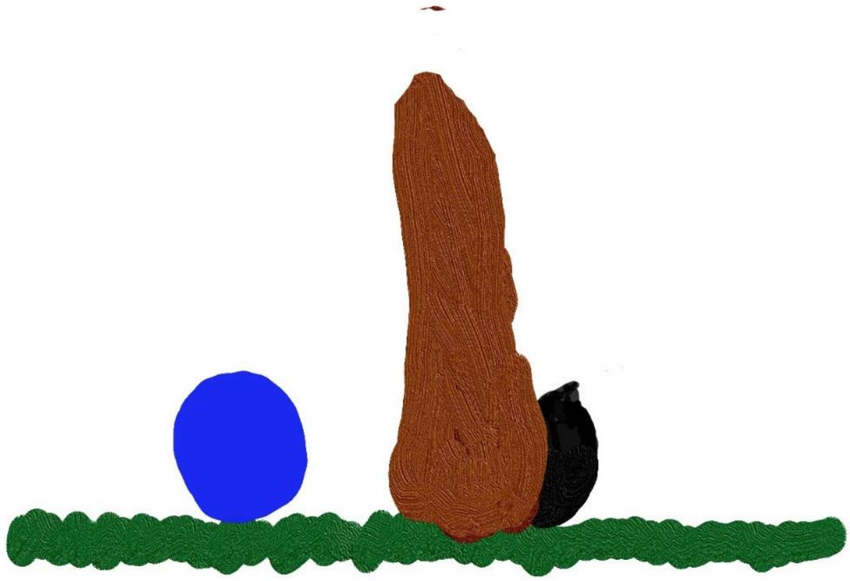

कालू को पता चल ही गया।

मास्टर भूरेलाल उसके घर जो जा पहूँचे।

घर पर उसे जम के डाँट पड़ी।

तभी से उसे नीलू की तलाश है।

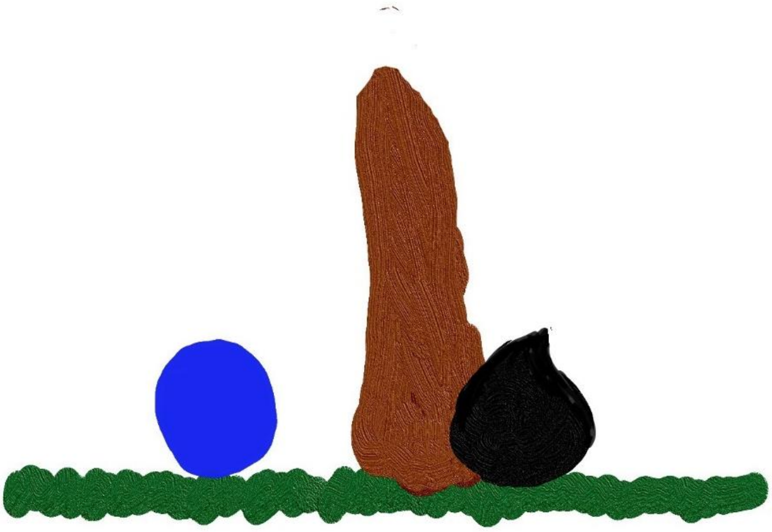

कालू एकदम नीलू के सामने जा खड़ा हुआ।

“ अब मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा। चुगलखोर!

मैं तुझे इतना मारूँगा, इतना मारूँगा कि मार मार के तेरा रंग बदल दूँगा।

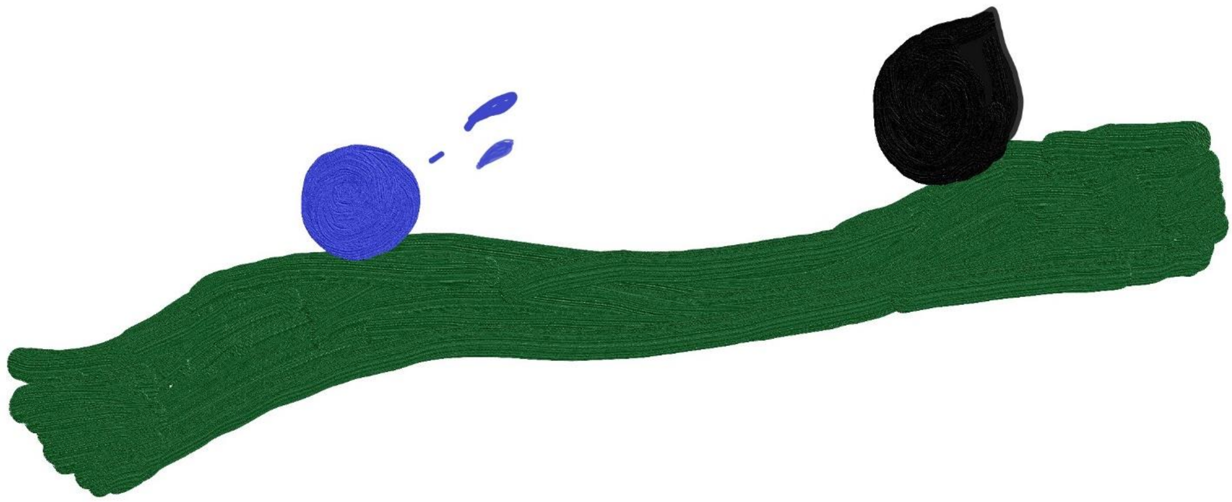

नीलू डर कर भागा।

भागता ही गया.... भागता ही गया...

आगे-आगे नीलू, पीछे पीछे कालू।

ऐसा लगता था कि अब बस कालू उसे पकड़ ही लेगा।

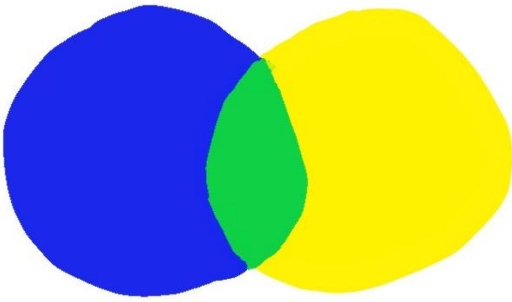

अचानक नीलू किसी से टकराया।

अरे ये तो पीलू ही है। वो एकदम पीलू से लिपट गया।

पीछे से दौड़ता हुआ कालू भी आ गया।

दोनों ने डर के आँखें बंद कर लीं। बस अब मार पड़ी ही समझो।

अरे! कुछ भी नहीं हुआ।

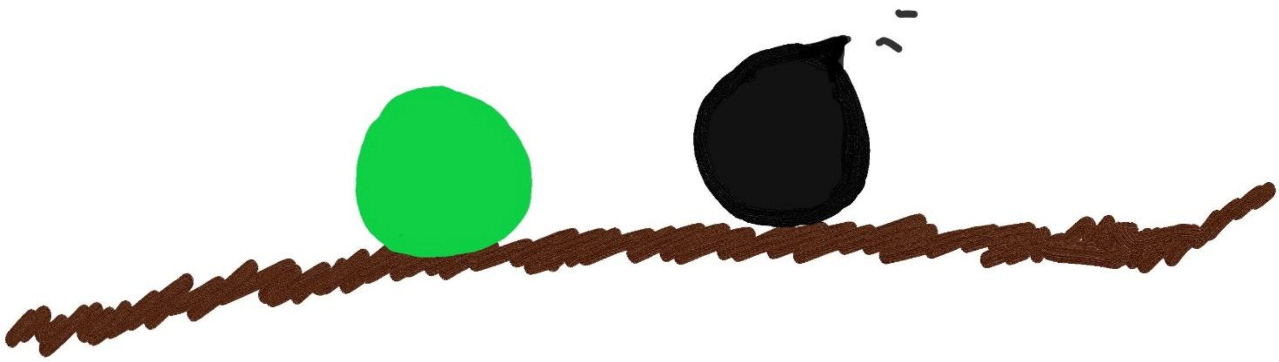

उन्होंने आँखें खोलीं।

सामने ही काल़ू खड़ा था।

पर वो तो इधर-उधर देख रहा था।

उसने उनकी ओर देखा...

और सीधा आगे निकल गया।

बिना कुछ कहे... बिना कुछ किये!

ये क्या चमत्कार हुआ?

या तो कालू बदल गया है या फिर वो गायब हो गये हैं।

दोनो उसी तरह एक दूसरे को कस के पकड़े नीलू के घर पहूँचे। नीलू ने माँ को आवाज लगाई। माँ ने बाहर आ कर इधर-उधर देखा।

“तुम कौन हो? हमारा नीलू कहाँ है?”

“मैं ही आपका नीलू हूँ।” नीलू ने कहा।

“ नहीं, तुम तो हरे हो।” पापा नीले बोले।

“हमारा नीलू तो नीला है।”

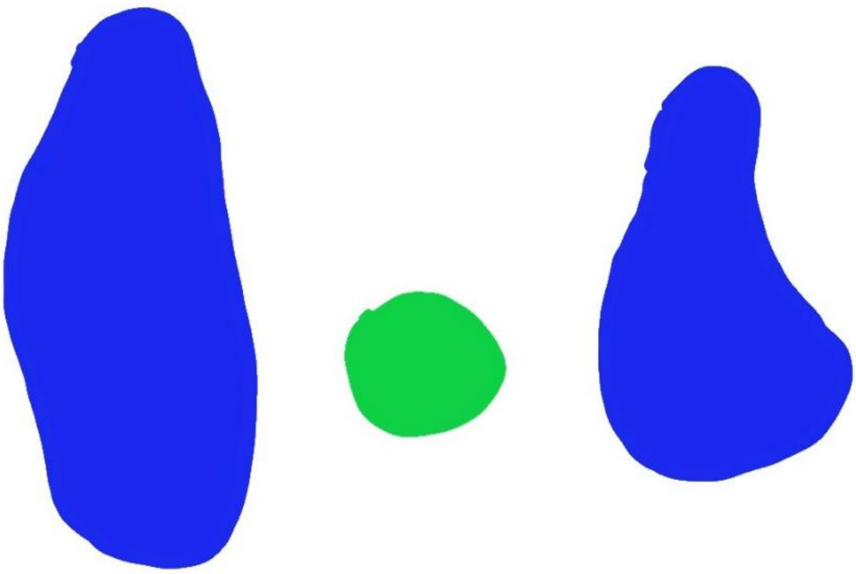

अब वो दोनों पीलू के घर पहूँचे।

“ नहीं , तुम हमारे बेटे नहीं हो सकते। हमारा पीलू तो पीला है। तुम तो हरे हो।”

माँ पीली और पापा पीले ने कहा।

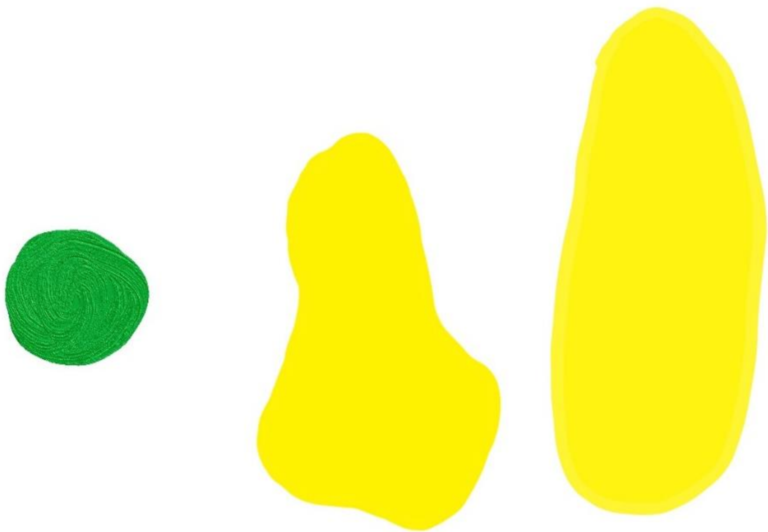

नीलू, पीलू ने अपनी ओर देखा।

वे तो सचमुच हरे हो गये। ये क्या हुआ?

वे घबरा कर रोने लगे।

रोते गये..... रोते गये.......

आँसू ही आँसू...........

पीले आँसू और नीले आँसू।

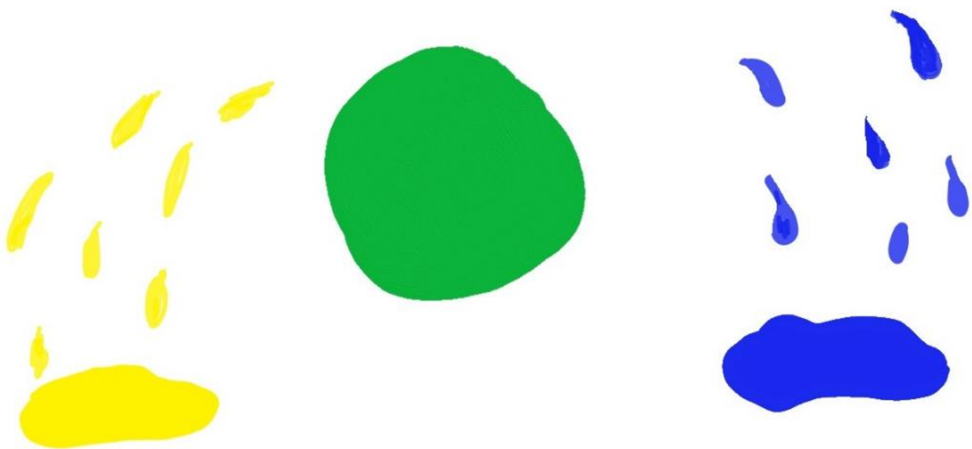

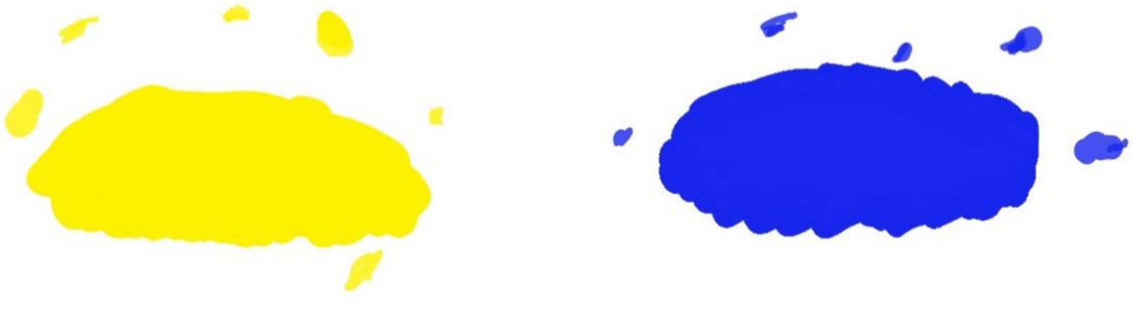

वो इतना रोए.. इतना रोए...

कि सिर्फ आँसू ही आँसू बचे।

पीले आँसू और नीले आँसू।

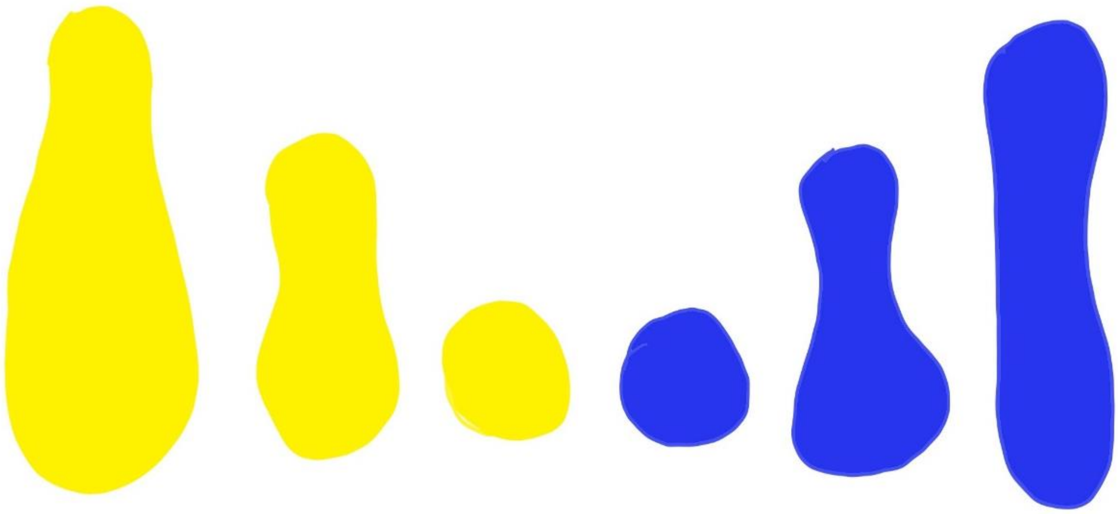

फिर उन्होंने अपने आप को समेटा।

तब तक चिंता करते हुए माँ नीली ओर पापा नीले भी वहाँ पहुँच गये।

“अब तो आपको यकीन हो गया ना?”

नीलू और पीलू ने अपने-अपने माँ पापा से पूछा।

माँ नीली और पापा नीले अपने लाड़ले छोटे नीलू को देख कर खुश हो गये।

माँ नीली ने पीलू को गोद में उठा लिया।

तो माँ पीली ने छोटे नीलू को गोद में उठा लिया।

अरे! देखो ये क्या हो गया?

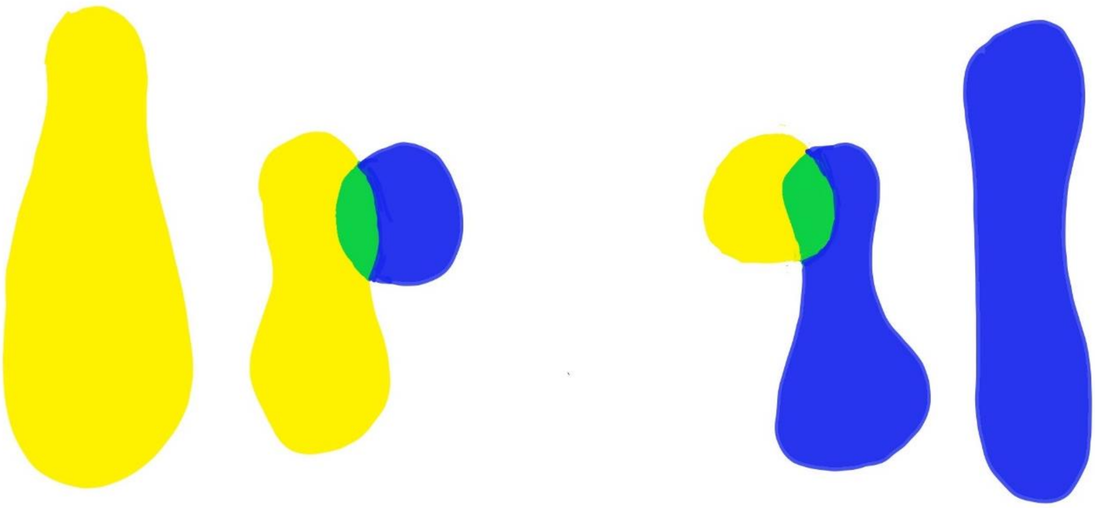

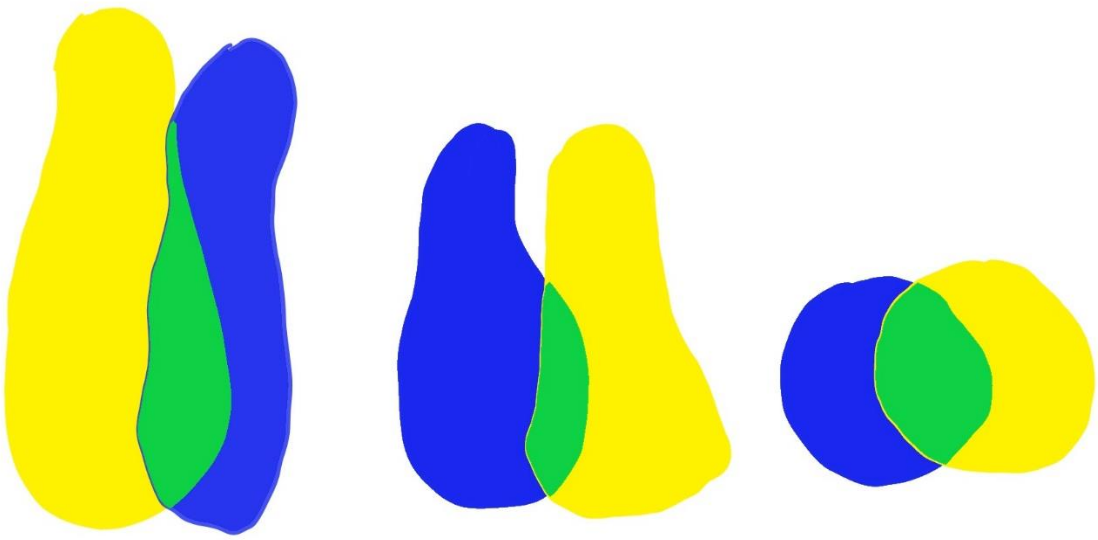

अब बात सबकी समझ में आई।

वे सब आपस में गले मिले और खूब हँसे।

नीलू और पीलू ने स्कूल में जा कर ये बात सभी बच्चों को बतलाई।

बच्चों को तो जैसे नया खेल मिल गया।

किसकी जोड़ी किसके साथ.....

और देखो कौन क्या बन गये।

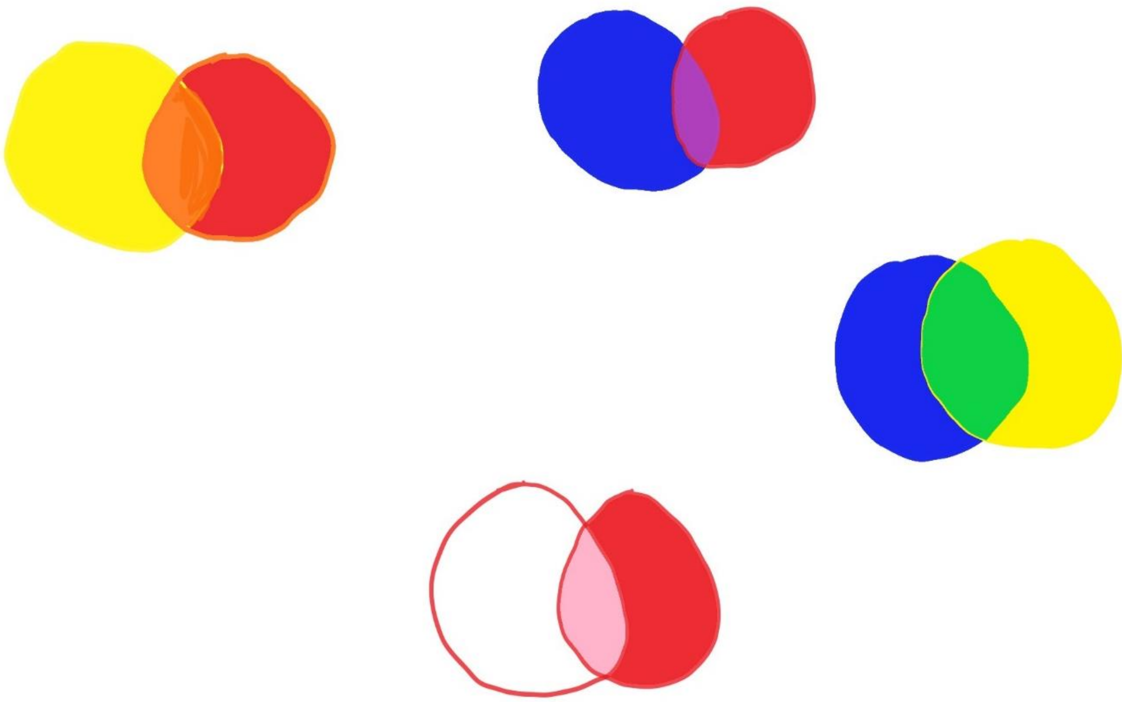

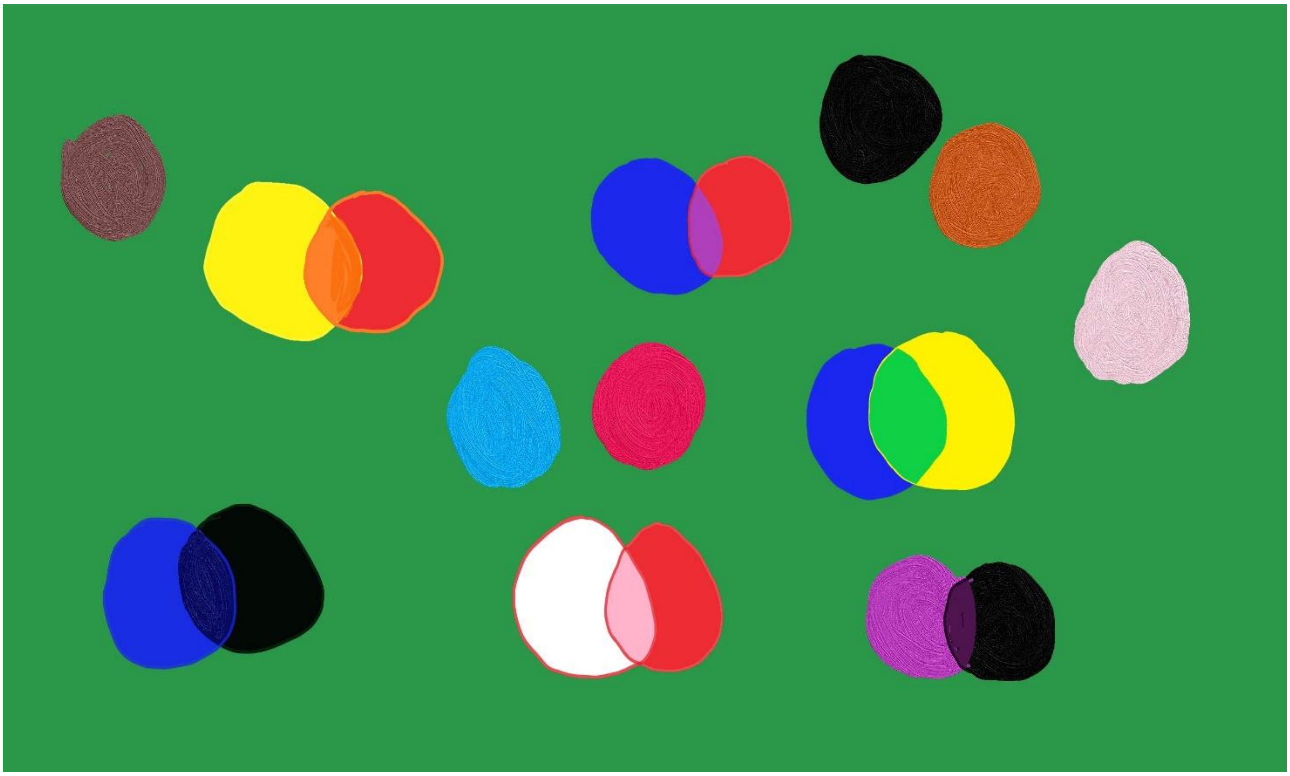

अब तो रोज छुट्टी होते ही वो सब यही खेल खेलते हैं।

आजकल तो काल़ू भी उनके साथ खेलता है।

अब वे सभी दोस्त हैं।